P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थानी भाषा के विकास में चारण साहित्य का योगदान

एकता
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

चारण साहित्य राजस्थानी भाषा का सबसे समृद्ध साहित्यों में से एक है। चारण साहित्य ने राजस्थानी भाषा के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस साहित्य का सृजन चारण कवियों द्वारा प्रमुखतः किया गया है। अधिकांश चारण कवियों द्वारा डिंगल भाषा का प्रयोग राजस्थानी साहित्य में सरसता एवं रोचकता का समावेश करने हेतु किया गया है। चारण–साहित्य अधिकांशतः पद्यमय, वीररसात्मक एवं श्रृंगारपरक हैं चारण साहित्य में अचलदास खींची री वचनिका, पृथ्वीराज रासो, सूर्य प्रकाश वंशभास्कर, बांकीदास ग्रंथावली आदि प्रमुख हैं।

मुख्य शब्द : चारण साहित्य, सृजन, अधिकांश, सरसता, समावेश, रोचकता, वीररसात्मक, श्रृंगारपरक, अचलदास खींची री वचनिका, पृथ्वीराज रासो, बांकीदास ग्रंथावली, वंशभास्कर, ग्रंथावली, डिंगल।

प्रस्तावना

साहित्य इतिहास की छाया हैं जो किसी काल–क्रम के घटना चक्र का अपने अनुरूप व्यतीत करता हैं चारण साहित्य ही राजस्थानी साहित्य का विशुद्ध रूप है यदि राजस्थानी साहित्य से चारण साहित्य को पृथक् कर दिया जाये तो राजस्थानी साहित्य पंगु के सिवाय और कुछ नहीं है अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी की राजस्थानी साहित्य व चारण साहित्य एक–दूसरे के पूरक हैं। चारण साहित्य को महत्त्वपूर्ण मानने वालों में श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर, श्री आशुतोष मुकर्जी, श्री मदन मोहन मालवीय, श्री एल.पी. टैस्सितोरी जैसे महापुरुष शामिल हैं।

चारण–साहित्य स्त्रोत उपलब्धता से यह स्पष्ट है कि चारण कवि युद्धस्थल में उपस्थित होकर लड़ने वाले वीरों को प्रोत्साहन ही नहीं देता अपितु स्वयं तलवार लेकर युद्ध में जूझ जाता था। चारण कवि केवल कलम का ही धनी नहीं अपितु तलवार का भी था।[1]

अध्ययन का उद्देश्य

चारण साहित्य का मुख्य उद्देश्य साहित्य सेवा करना तथा वीर रसता को जनमानस तक पहुँचाना व उनसे अवगत करवाना रहा है। न्यायमूर्ति आशुतोष मुकर्जी ने साहित्यिक व ऐतिहासिक दृष्टि से चारण–साहित्य को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। महान् विद्वानों द्वारा चारण साहित्य को इस दृष्टि से देखा गया जो की इतिहास में चारण साहित्य को उत्कृष्ट स्थान प्रदान करता है।

साहित्यावलोकन

डॉ. श्यामसिंह रत्नावत व डॉ. कृष्ण गोपाल शर्मा ने अपने ग्रन्थ 'चारण साहित्य परम्परा' जो कि जयपुर से 2001 में प्रकाशित है इस ग्रन्थ में चारण साहित्यकारों की उत्पत्ति, स्त्रोत एवं उनकी प्रमुख रचनाओं का वर्णन प्रस्तुत किया है।

'राजस्थानी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन 2015 में जयपुर से हरदान हर्ष के द्वारा किया गया है। जिसके अध्याय प्रथम में चारण साहित्य का सामान्य प्रस्तुत किया है।[2]

सीताराम लालस द्वारा लिखित 'राजस्थानी व्याकरण और साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन 2016 में जोधपुर से किया है। जिसमें कुल 5 अध्याय हैं इन अध्यायों में राजस्थानी साहित्य में चारण साहित्य के योगदान का वर्णन प्रस्तुत किया है।[3]

डॉ. मोतीलाल मेनारिया के द्वारा 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन 2016 में जोधपुर से किया गया। इस ग्रन्थ में राजस्थानी भाषा के साथ चारण साहित्य का वर्णन किया है।

चारण साहित्य में चरित्र–नायकों के नाम पर रखे ग्रन्थ जो कि इस प्रकार हैं–

नायकों के आधार पर ग्रन्थ रचनायें–

1. रासौ–रायमल रासौ, राणा रासौ, संगत सिंहा रासौ, रतन रासौ, महाराजा श्री सुजानसिंह जी रासौ।
2. प्रकास–राजप्रकास, सूरजप्रकास, भीमप्रकास, रतनप्रकास, कीरतप्रकास इत्यादि।
3. विलास–राजविलास, खगविलास, जैविलास, रतनविलास, अभयविलास, भीमविलास आदि।
4. रूपक–राजरूपक, गोगादेरूपक, राव रिणमल रो रूपक, महाराज गजसिंह जी रो रूपक, रतन रूपक इत्यादि।
5. वचनिका–अचलदास खींची री वचनिका, राठौड़ रतनसी री वचनिका, महेसदासौत री वचनिका इत्यादि।[4]

छन्दों के आधार पर रखे गये ग्रन्थों के नाम

1. नीसांणी–गोगैजी चहुँवाण री नीसांणी, राठोड़ अजब सिंह, गंगासिंघोत री नीसांणी, आंबेर रा प्रतापसिंह रा झूलणा इत्यादि।
2. झूलना–सोढ़ो रा गुणझूलना, राजा गजसिंह जी रा झूलणा, राव सुरताण देवड़ौ रा झूलणा, अमरसिंह जी रा झूलणा।
3. वेल–राजकुमार अनोपसिंह री वेल, राजा रायसिंह जी री वेल, राणै उदेयसिंहजी री वेल, राठौड़ देईदास जेतावत री वेल, राजा सूरजसिंह जी री वेल इत्यादि।
4. झमाल–वीदावत करमसेण हिमतसिंघोत री झमाल, झमाल जोर सिंघ चांपावत री, झमाल आऊआ री इत्यादि।
5. गीत–सीघलां रा गीत, पांवरां रा गीत, जाडैचां रा गीत राठौड़ रामसिंघ जी रा गीत, राजा रायसिंघ जी रा गीत इत्यादि।
6. कवित्–महाराज अभैसिंघ जी रा कवित्त[5], पंवार अखैराज राठौड़ रतनसी रा कवित्त[6], जोधपुर महाराजा गजसिंघ जी रा निर्वाण रा कवित्त, चहुँवाण सांवलदासजी करमसिंघजी रा कवित्त[7] इत्यादि।
7. दूहा–पाबूजी रा दूहा, राव अमरसिंघ जी रा दूहा[8], सांगैराणै रा दूहा, हमीर राणौ रा दूहा, समरसी चहुवांण रा दूहा लाखै फूलाणी रा दूहा[9] इत्यादि।

ग्रन्थ सार

चारण–साहित्य के ये ग्रन्थ भिन्न समय अलग–अलग स्थानों पर लिखे गये इनके लिखने का प्रकार लगभग समान ही रहा है। प्रारंभ में ये ग्रन्थ केवल मंगलाचरण और देवी–देवताओं व गुरुओं की स्तुति में लिखे गये जिसके पश्चात् इसमें सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा से लेकर ग्रंथनायक तक के राजाओं के नाम गिनाए जाने लगे इनमें से कुछ बड़े राजाओं का उल्लेख विस्तारपूर्ण किया गया।

इनमें मुख्य कथा चरित्र नायक के जन्म से प्रारंभ होकर उसकी युद्ध वीरता, उसके आतंक–पराक्रम, विजय, वीरदर्प–पूर्ण का विवरण किया जाता है। तत्पश्चात् चरित्र–नायक की मृत्यु के साथ ग्रंथ की समाप्ति की जाती है।[10]

राजस्थानी साहित्य में असंख्य वीर एवं दानी पुरुष, महापुरुष व अनेक समय की कई घटनाएँ घटित हुई जो कि हमें फुटकर दोहे, कवित्त, गीत के माध्यम से वास्तविक स्वरूप को हमारी आंखों के सामने लाने का प्रयास करते हैं। इनमें किसी सुपात्र की वीरता–दानशीलता की प्रशंसा होती है या किसी कुपात्र की कायरता–कर्दयता की नियती की निंदा

"तेरा सौ तेरा तवाँ, जनम्यौ धांधल धाम।
तेरा सौ सैंतीस मैं, कमधज आयौ काम।।"[11]

राजस्थानी भाषा के विकास में चारण साहित्य का योगदान

राजस्थानी साहित्य का मध्ययुग वस्तुतः (वि.सं. 1461 से 1900)[12] तक में चारण साहित्य का उत्थान युग था इस काल के अधिकांश कवि चारण थे जिन्होंने ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक एवं लौकिक आदि विभिन्न शाखाओं में ओजयुक्त वीर रस, लावण्य, निष्ठायुक्त भक्ति रस के साथ–साथ अनेकानेक प्रबन्ध काव्य, मुक्तक काव्य, फुटकर गीत एवं लोक साहित्य[13] का सृजन किया। इसी कारण राजस्थानी साहित्य में प्रौढ़ता के लक्षण प्रकट होने लगे। यही भाषा 18वीं एवं 19वीं में शताब्दी में उच्च काव्य प्रतिभा सम्पन्न चारण साहित्यकारों की लेखनी से पूर्ण परिमार्जित होकर युग के समूचे साहित्य में धाराप्रवाह के रूप में बही है।

चारण कवियों ने राजस्थानी भाषा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया जिसमें कवि अलुनाथ, जग्गा खिड़िया, सायांजी झूला, ओपा आढ़ा, ईसरदास आदि भिन्न–भिन्न भक्त कवियों के उत्तम छप्पय, कवित्त, गीता आदि जनसाधारण के मध्य आये।

1. चारण–साहित्य साधना कर कायरों में उत्साह का मंत्र फूंका और निष्प्राणों में अपनी ओजस्विनी वाणी की संजीवनी बूंटी से प्राणों का संचार किया।
2. चारण साहित्य समग्र हिन्दू जाति के लिए एक अपूर्व देन है जिसके अभाव में अन्य भाषाओं में वस्तु का अभाव है।
3. चारण साहित्य प्रमुख रूप से राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश चारण साहित्य का गढ़ है, यहाँ के साहित्य रत्नराशियों, कवियों द्वारा राजस्थानी भाषा में गद्य–पद्यमय अद्वितीय साहित्य का सृजन किया।[15]
4. चारण साहित्य ने अन्य साहित्य के लिए वीर रस का सृजन किया।[17]
5. चारण–साहित्य के इतिहास ने हमारी सांस्कृतिक पवरम्परायें पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित की है।
6. चारण कवियों द्वारा गाये जाने वाले गीत निराश मन को भी आशा का संचार करवाने में सहायक है।
7. चारण की ही देन डिंगल साहित्य रहा है।[18]
8. चारण साहित्य शैली में लिखा गया ऐसा साहित्य जिसमें चारण कुल में उत्पन्न कवियों द्वारा ही रचना नहीं की गई अपितु ब्राह्मण, ढाढी, ढोली, राव, मोतीसर आदि जो समानता के सूत्र में पिरोती है।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार से ये स्पष्ट होता है कि चारण साहित्य का राजस्थानी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस के अभाव में राजस्थानी विकास व साहित्य का कोई अस्तित्व नहीं है।

प्रमुख चारण साहित्यकार व प्रमुख ग्रन्थ

1.	कल्याणदास	गुण गोविन्द (डिंगल–ग्रंथ)
2.	सीलगा सांईदान	संतसार (वृष्टि–विज्ञान ग्रन्थ)
3.	राव डूंगरसी	500 छंदों की रचना की। 'शत्रुसाल रासो' (ग्रंथ)

4.	जग्गाजी	वचनिका राठौड़, रतनसिंह जी री महेसदासोतरी अन्य नाम (रतन रासौ)
5.	गिरधर	संगतसिंघ रासौ
6.	जोगीदास	हरिपिंगल–प्रबन्ध
7.	वीरभाण	राजरूपक (डिंगल भाषा)
8.	नरहरिदास	अवतार–चरित्र (ब्रज भाषा)
9.	गोविन्द जी	फुटकर गीत (स्वतन्त्र रचना उपलब्ध नहीं)
10.	किसना आढा	रघुनाथरूपक गीतों रौ, कविकुल बोध, रघुरस प्रकास

अन्य प्रमुख साहित्यकार–बांकीदास, दयालदास, सूर्यमल्ल मिश्रण चारण गद्य साहित्य के अमर लेखक रहे।

निष्कर्ष

चारण साहित्य ने राजस्थान के सामाजिक जीवन पर अपना गहरा प्रभाव डाला, मुगलों के सतत् सामरिक अभियानों ने आमजन व राजघरानों की जन–जीवन में अव्यवस्था फैलाई जिसमें सरलता, स्थिरता, वीरता, साहस, चारण साहित्य द्वारा उत्तेजित किया गया। समाज में व्याप्त कुरीतियों–सती प्रथा, बाल–विवाह, बहु–विवाह, अफीम, मदिरा, जादू–टोना, छुआछूत जैसी उग्र भावना को उत्तेजित होने के बावजूद आमजन तक इनके विरूद्ध करने का प्रयास चारण साहित्य द्वारा किया गया।

किसी भी देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को जानने के लिए उस देश के साहित्य को जानना एक मूल आधार होता है चारण साहित्यिक रचना भी उनमें से एक है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जैसा समाज, वैसा ही समाज का साहित्य चित्रित होता है। चारण साहित्य में हिन्दु–मुस्लिम सम्मिश्रण संस्कृति का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। चारण साहित्य ने समाज के सभी पक्षों को स्पर्श करते हुए उसे लिखा है।

चारण साहित्यकारों ने भक्ति–भावना से परिपूर्ण होकर काव्य साधना की जिसने युद्धों की विभीषिका से जनता को राहत व साहसता प्रदान की साथ ही गुरु परम्परा का महत्त्व भी समझाया।

चारण साहित्य में नारी के आदर्श का उल्लासमय वर्णन हुआ है जिसने भारतीय वर्ष में नारी को अपूर्व ओजस्विता के साथ अपनाया है जो इस साहित्य की अद्भुतपूर्ण देन है।

अंत टिप्पणी

1. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 40.*
2. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 40–41.*
3. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 40–41.*
4. *जिज्ञासु, मोहनलालः चारण साहित्य का इतिहास भाग प्रथम, जोधपुर, 1976, पृ. 37.*
5. *लालस, सीतारामः राजस्थानी भाषा साहित्य एवं व्याकरण, जोधपुर, 2016 पृ. 163*
6. *लालस, सीतारामः राजस्थानी भाषा साहित्य एवं व्याकरण, जोधपुर, 2016, पृ. 37*
7. *जिज्ञासु, मोहनलालः चारण साहित्य का इतिहास भाग प्रथम, जोधपुर, 1976, पृ. 37.*
8. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 129*
9. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 130.*
10. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 130*
11. *मेनारिया, मोतीलालः राजस्थानी भाषा और साहित्य, जोधपुर, 2016 पृ. 131*
12. *लालस, सीतारामः राजस्थानी भाषा साहित्य एवं व्याकरण, जोधपुर, 2016, पृ. 153*
13. *जिज्ञासु, मोहनलालः चारण साहित्य का इतिहास भाग द्वितीय, जोधपुर, 2010, पृ. 215.*
14. *जिज्ञासु, मोहनलालः चारण साहित्य का इतिहास भाग द्वितीय, जोधपुर, 2010, पृ. 215.*
15. *जिज्ञासु, मोहनलालः चारण साहित्य का इतिहास भाग द्वितीय, जोधपुर, 2010, पृ. 215.*
16. *राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियाँ एवं प्रमुख साहित्यकार, राजस्थान का इतिहास कला व संस्कृति एक सर्वेक्षण, पृ. 202, 203.*
17. *नीरज, जयसिंह, शर्मा, भगवती लाल, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, जयपुर, 2018, पृ. 164, 165.*
18. *रत्नावत, श्यामसिंह व शर्मा कृष्ण गोपालः चारण साहित्य परम्परा, जोधपुर, 2010.*